IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन

सत्येन्द्र सिंह राठौड़
पीएच.डी. (शिक्षा) शोधार्थी,
संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान।

सार

शोधाथी द्वारा पीएच.डी. स्तरीय शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना था। न्यादर्श चयन हेतु शोधार्थी ने अजमेर व भीलवाड़ा जिले के कुल 300 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया, जिसमें से 150 महिला शिक्षक प्रशिक्षक एवं 150 पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया। व्यावसायिक उन्नयन के मापन के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। संकलित दत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एव टी–परीक्षण के माध्यम से किया गया था। शोध के निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक उन्नयन में सार्थक अंतर होता है।

विशिष्ट शब्द :– शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, व्यावसायिक उन्नयन।

1.1 प्रस्तावना :–

पुरानी अवधारणा,'शिक्षक पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते' में वर्तमान युग में जबरदस्त बदलाव आया है और अब यह माना गया है कि शिक्षक को विषय वस्तु के ज्ञान के साथ–साथ बाल मनोविज्ञान और उन्नति के आधार पर शिक्षण की कला भी सीखनी होगी। शिक्षाशास्त्र के विज्ञान में. यह सब संचार के साथ–साथ 'शिक्षक होगा' को सिखाया जाना है। इस उद्देश्य के लिए एक शिक्षक को ऐसे शिक्षक के रूप में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है, जो बच्चे को बेहतर ढंग से समझता हो। शिक्षाशास्त्र की मांग है कि शिक्षक को विषय और बच्चे दोनों का ज्ञान होना चाहिए। उसे अपने विकास के विभिन्न चरणों में बच्चे की जरूरतों की सराहना करने में सक्षम होना चाहिए। उसे बच्चे को समायोजन में मदद करनी चाहिए। उसे पता होना चाहिए कि सीखना कैसे होता है यानी सीखने की प्रक्रिया में मदद करने वाले कौन से भौतिक साधन हैं। बच्चे को सीखने के लिए कैसे प्रेरित करें? बुनियादी आग्रहों और दबी हुई भावनाओं के उदात्तीकरण के अवसर कैसे पैदा करें? विभिन्न परिसरों के निर्माण से कैसे बचें? संपूर्ण एवं एकीकृत व्यक्तित्व के विकास के लिए किन–किन बातों का आयोजन किया जाना चाहिए? यह सब एक प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा संभाला जा सकता है जिसके पास शिक्षण के सिद्धांत और अभ्यास का सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों है, जो केवल शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के संगठन द्वारा ही किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में किए गए नवाचारों और अनुसंधान के सामने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

और शिक्षण की कला और विज्ञान का महत्व काफी बढ़ गया है, दूसरे शब्दों में, माइक्रोटीचिंग, टीम शिक्षण, प्रोग्राम किए गए निर्देश, सिमुलेशन, दूरस्थ शिक्षा, मुक्त शिक्षण, कंप्यूटर, पत्राचार शिक्षा आदि। अब शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम इतना महत्वपूर्ण हो गया है कि शिक्षण के प्रशिक्षण कार्यक्रम से गुजरे बिना शिक्षक बनना अनैतिक लगता है। तथ्य यह है कि प्रशिक्षण शिक्षक को उसके शिक्षण कार्य के लिए तैयार करता है और उसका सही उपयोग करता है। शिक्षकों की पर्याप्त तैयारी के बिना पुनर्निर्माण की अल्प शिक्षा प्रभावी ढंग से हो सकती है। हाल ही में यह आवश्यक समझा गया कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल स्कूल स्तर पर ही आवश्यक है और कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, वर्तमान युग में ज्ञान और शिक्षण की तकनीकों की प्रगति इतनी विकसित हो गई है कि अब यह महसूस किया जाने लगा है कि कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर भी शिक्षण के लिए शिक्षण की कला प्रदान करने की आवश्यकता है और इसी तरह अकादमिक स्टाफ कॉलेज की योजना बनाई गई है। भारत में इसे तैयार कर क्रियान्वित किया गया है। शिक्षण की तकनीकों के बारे में उनके अनुभव और ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने की शर्तों के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों के लिए शिक्षण कौशल के विकास और ज्ञान के नवाचार के संपर्क के लिए इसे अपनाना आवश्यक बना दिया गया है।

आधुनिक शिक्षकों में छात्रों को आलोचनात्मक विचारक, नवोन्वेषी, रचनात्मक, अनुकूलनीय, भावुक और लचीला बनने के लिए सशक्त बनाने की क्षमता है। वे उन्हें समस्याओं को हल करने, आत्म-निर्देशन, आत्म-चिंतन और नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाते हैं। वे उन्हें न केवल स्कूल में बल्कि जीवन में भी सफल होने के उपकरण देते हैं।

1.2 समस्या कथन :-

"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन"

1.3 समस्या का औचित्य :-

इस शोध के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षक यह जान पायेगे कि किस तरह से व्यावसायिक उन्नयन किया जा सकता है तथा उसके लिए क्या क्या प्रयास किए जाने चाहिए। यह शोध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करने पर भी यह ज्ञात हुआ कि शोध के शीर्षक पर पूर्व में अधिक काम नहीं हुआ है,जो कि शोध की सार्थकता को दर्शाता है।

1.4. शोध के उद्देश्य :-

शोधार्थी द्वारा अपने शोधकार्य के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है:-

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास का अध्ययन करना।

1.5 शोध की प्राकल्पनाएँ :-

शोधार्थी द्वारा उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शून्य प्राकल्पना का निर्माण इस प्रकार से किया गया है :-

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास का स्तर औसत स्तर का है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.6 शोध में प्रयंक्त शब्दावली का परिभाषीकरण :-

व्यावसायिक विकास अथवा उन्नयन

प्रो. पी.बी. शंकरा के अनुसार ‘‘व्यावसायिक विकास का संबंध किसी भी व्यक्ति की अपने काम या प्रैक्टिस से संबंधित ज्ञान और कौशल अर्जित करने की क्षमता से या जानकारी की तलाश करने और अपने व्यावसायिक क्षेत्र में स्वयं को सुविज्ञ बनाए रखने से है।’’ - एनसीएफटीई, 2009, पृ. 64.5

‘‘शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को एक जीवन.पर्यंत की गतिविधि के रूप में देखा जाना चाहिए जो उनके निजी और साथ ही व्यावसायिक जीवन पर और कार्यस्थल की नीति और सामाजिक सन्दर्भ पर ध्यान केंद्रित करती है।’’ - क्रिस्टोफर डे (1999)

1.7 न्यादर्श :-

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में न्यादर्श चयन करने हेतु अजमेर व भीलवाड़ा जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के नामों को कागज की पर्ची पर लिखकर लॉटरी विधि द्वारा कुल 30 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया गया है। 30 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से कुल 300 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया है। न्यादर्श का स्वरूप इस प्रकार से है :-

न्यादर्श

(300 शिक्षक प्रशिक्षक)

महिला शिक्षक प्रशिक्षक (150) पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक (150)

1.8 समस्या का परिसीमन :-

शोधकार्य का गहनता से अध्ययन करने के लिए शोधार्थी द्वारा शोधकार्य को निम्नलिखित रूप से परिसीमित किया गया है :-

1. शोधकार्य को अजमेर व भीलवाड़ा जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
2. शोधकार्य को शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों तक सीमित रखा गया है।

1.9 अध्ययन विधि :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी को शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना है जिसके लिए शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

1.10 उपकरण :-

दत्त संकलन हेतु संभावित रूप से निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया गया :-

1. व्यावसायिक विकास के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली

1.11 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :-

शोधार्थी द्वारा दत्तों के संकलन हेतु संभावित रूप से निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया :- मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण।

1.12 दत्त विश्लेषण :-

1.12.1 शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों के स्तर का अध्ययन करना

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करने के लिए अजमेर व भीलवाड़ा जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के कुल 300 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया। तथा उन्हे स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन प्रश्नावली को दिया गया। प्रश्नावली से प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन निम्न सारणी संख्या 1 में प्रदर्शित किये गये हैः-

सारणी सांख्या 1

शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
व्यावसायिक उन्नयन	300	205.61	19.13

सारणी से स्पष्ट है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का मध्यमान 205.61 एवं मानक विचलन 19.13 हैं जो शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन प्रमापनी के औसत मान (अधिकतम प्राप्तांक 5'59=295 $ न्यूनतम प्राप्तांक 1'59=59/2 =177)177 से अधिक हैं। जिससे स्पष्ट है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन प्रमापनी के प्राप्तांकों का मान औसत स्तर से अधिक है,अतः परिकल्पना संख्या 1 अस्वीकृत की जानी है।

रेखाचित्र सांख्या 1

शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का मध्यमान

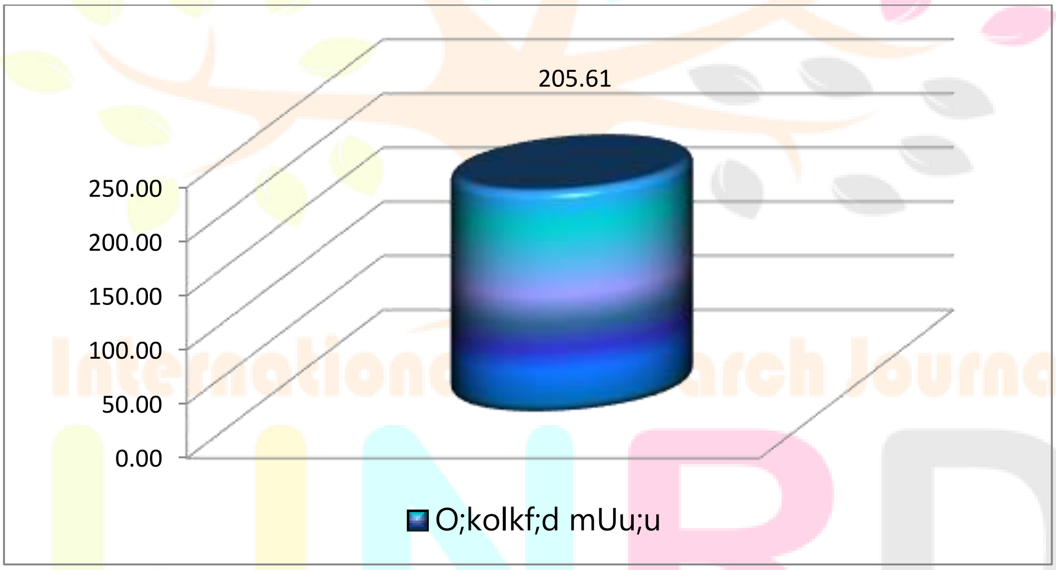

1.12.2 पुरुष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन करना

प्रस्तुत शोध में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करने के लिए अजमेर व भीलवाड़ा जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के कुल 300 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया। जिसमें से 150 पुरुष एवं 150 महिला शिक्षक प्रशिक्षकों को चयनित किया गया तथा उन्हे स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन प्रश्नावली को दिया गया। प्रश्नावली से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान सारणी संख्या 2 में प्रदर्शित किये गये हैः–

सारणी सांख्या 2
पुरुष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

व्यावसायिक उन्नयन	संख्या	पुरुष शिक्षक प्रशिक्षक		महिला शिक्षक प्रशिक्षक		
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
व्यावसायिक उन्नयन	300	203.31	18.25	207.92	19.75	2.10*

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक = 1.98 से अधिक

सारणी से स्पष्ट है शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का मध्यमान 203.31 एवं मानक विचलन 18.25 हैं तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का मध्यमान 207.92 एवं मानक विचलन 19.75 हैं। जिससे स्पष्ट है कि महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का मध्यमान, पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों के मध्यमान से सार्थक अधिक है। पुरुष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों के अन्तर का टी–मान 2.10 हैं जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर सैद्धान्तिक मान 1.98 से अधिक है। अतः परिकल्पना संख्या 2 अस्वीकृत की जानी है।

रेखाचित्र सांख्या 2
पुरुष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों के मध्यमान

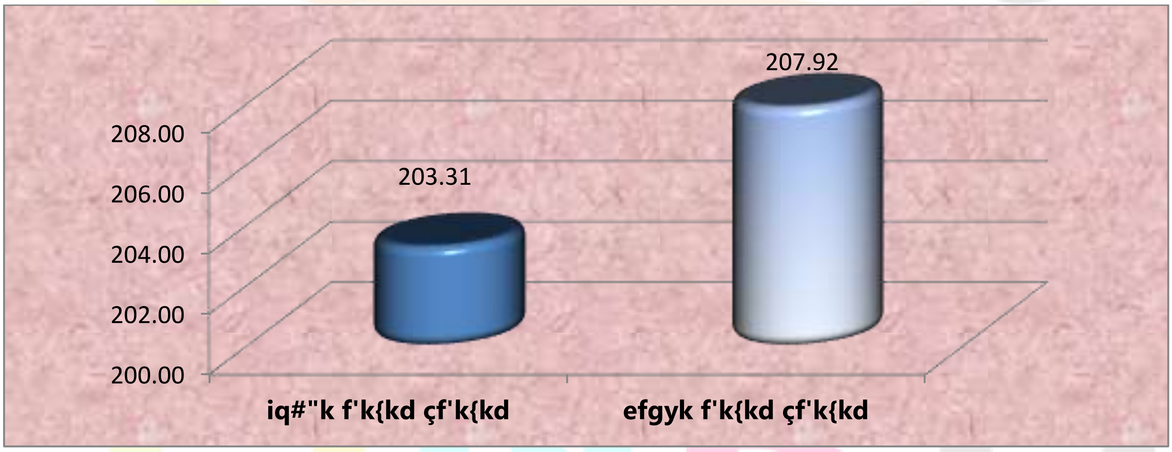

1.13 निष्कर्ष :–

शोध से स्पष्ट है कि

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास का स्तर औसत स्तर से अधिक पाया गया।

2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास में सार्थक पाया गया। जिसमें महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों का मध्यमान, पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों के कुल व्यावसायिक उन्नयन के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Acevedo, B. (2013). Images of Leadership: Using visual methods in leadership studies. In (Eds) Bell, Schroeder and Warren. Handbook of Visual Research Methods in Organisational Studies. London: Sage.
- Clark, L. V. (2008). Teacher professional development as a third space: researcher and practitioner dialogues, Ph.D. Thesis. Department of Curriculum and Instruction, University of Indiana, Retrieved from http://pqdtopen.proquest.com /doc/304606742. html? FMT=ABS on 21st December, 2015.
- Darling-Hammond, L., Mc-Laughlin, M. W. (1995). Policies that support professional development in an era of reform. Phi Delta Kappan,76 (8), 597-604.
- Loucks-Horsley, S., & Matsumoto, C. (1999). Research on professional development for teachers of mathematics and science: the state of the scene. School Science and Mathematics, 99, 258-271. doi:10.1111/j.1949-8594.1999.tb17484.x

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation